RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 41 अंक 12 हल्द्वानी सम्वत् 2082 सोमवार 25 अगस्त 2025 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

भादो मास में प्रकृति का श्रृंगार, फूलों की बहार

जीवन सिंह दुग्ताल

सावन-भादो की वर्षात और उत्तराखण्ड में आपदा के घाव अभी ताजा हैं लेकिन भाद्रपद (भादो) मास में प्रकृति का श्रृंगार भी देखते ही बनता है। सीमान्त की घाटियों में बुग्यालों से लेकर दूर-दूर तक वन फूलों की अद्भुत छटा बिखरी हुई है। उच्चहिमालय के बर्फ से पहाड़ों के बाद प्रकृति का जो नजारा इन दिनों में दिखाई दे रहा है उसमें दारमा घाटी विशेष रूप से मोह रही है। प्राचीन काल से ही ऐतिहासिक महत्व की इस घाटी को 'सै समा लोंग्मा' (देवी देवताओं का निवास स्थान) माना जाता है। दारमा को दो भागों में बांटा गया है। मल्ला दारमा जिसमें सीपू, मारछा, तिदांग, ढाकर, गो, बौन, फिल, सोन, दुग्तू, दातू, बालिंग, नागलिंग, चल, सेला ग्राम और तल्ला दारमा में वोगलिंग, दर, तीजभ, वतन, वोमज, सोवला ग्राम शामिल हैं।

इस घाटी के दर्शनीय स्थल- पंचाचूली वेस कैम्प (ग्राम दुग्तू से एकदम निकट है), जिसे स्थानीय भाषा में न्यौला के नाम से जानते हैं। इसकी पूजा प्रतिवर्ष की जाती है। यहाँ सूर्योदय एवं सूर्यास्त का अति मनमोहक होता है। पास ही गाँव दांतू आध्यात्मिक दृष्टि से गबला देव मन्दिर, शिव मन्दिर है, जो कि प्राचीन काल से ही मान्यता के केन्द्र हैं। इस पवित्र भूमि में महान समाजसेवी श्रीमती जसुली अमा की जन्मस्थान व ग्राम दांतू है। इस महान दानवीरांगना की याद दिलाती सैकड़ों धर्मशालाएं आज भी कैलास मानसरोवर यात्रा मार्ग से

शेष पृष्ठ 2 पर

भारत के मीलपत्थर

किसके पास है परमेष्ठी के सवालों का जवाब

सूर्यकान्त बाली

हमने तीन सूक्तों का विशेष विश्लेषण करने का वायदा किया था। दो सूक्तों से हमारा परिचय हो चुका- भूमिसूक्त और विवाहसूक्त। आज हम तीसरे सूक्त, सृष्टि से अपना परिचय प्राप्त कर वेदों के आखिरी दशकों में पहुँच रहे हैं। महाभारत के रचयिता वेदव्यास ने आज से 5 हजार साल पहले वैदिक संहिताओं का जो संकलन किया था, वह आखिरी था और उसके बाद चारों संहिताओं के साथ कोई खास छेड़छाड़ नहीं की गई। आज जो चार वेद हमें जिस रूप में मिलते हैं, ये ठीक वही हैं, जो ऋषि वेदव्यास द्वारा संकलित किए गए थे। कोई खास प्रमाण तो इसका नहीं मिलता, पर एक परम्परा यह कहती है कि चारों वेदों का संग्रह कर चुकने के बाद वेदव्यास ने आदेश दिया होगा तो क्यों दिया होगा? हो सकता है कि मन्त्र रचना करने वाले ऋषियों के पास नया कहने के लिए कुछ न बचा हो और बस अभिव्यक्तियों, देवतारूपों और अलंकारों का मात्र पिष्टपेष्ण ही कर रहे हों। वेदव्यास द्वारा चार ग्रन्थों में वेद मन्त्रों का संकलन कर दिए जाने के बाद मन्त्र लिखे ही नहीं गए होंगे, ऐसा मान लेना सम्भव नहीं। पर वेदव्यास का जादू कुछ ऐसा था कि इन मन्त्रों को वेदों के मौजूदा प्राप्त संकलनों का इसके बाद हिस्सा बनाने का साहस किसी को नहीं हुआ। इसके बावजूद कुछ अतिसाहसियों ने कुछ मन्त्र ऋग्वेद के आठवें मण्डल के अन्त में जोड़े गए ग्यारह सूक्तों को हम इस वेद का स्वाभाविक हिस्सा नहीं माना जाता और इन ग्यारह सूक्तों को परिशिष्ट (खिल) ही माना जाता है।

पर वैदिक मन्त्र रचना के इस अवसान काल में अगर एक ओर देवता स्वरूपों के वर्णन में बासीपन और पिष्टपेषण आ गया था तो दार्शनिक सूक्तों के रूप में एकदम एक नई और मौलिक उद्भावना के दर्शन भी हमें होते हैं। जैसा कि हम कई बार कह चुकें हैं, ऋग्वेद कोई धर्म ग्रन्थ नहीं है। वे उस तरह से दार्शनिक ग्रन्थ भी नहीं है, जिस तरह से गीता, उपनिषदें या बौद्ध-सांख्य-वेदान्त आदि दर्शनों पर लिखे ग्रन्थों को दार्शनिक ग्रन्थ माना जाता है और ठीक ही माना जाता है। कुछ श्रद्धालुओं को वेद समस्त ज्ञान विज्ञान का अक्षय भण्डार नजर आते हैं, जिनमें ज्ञान और विज्ञान की हर विधा और शाखा को ढूंढा जा सकता है। हो सकता है कि यह श्रद्धाभाव ठीक ही हो, पर हम अपने भीतर वेदों के इस तरह के अध्ययन की क्षमता नहीं पाते। हमें तो वेद उत्कृष्ट कोटि के ऐसे साहित्य और काव्य नजर आते हैं, जो अत्यन्त प्रतिभाशाली ऋषि-कवियों की मेधा का चमत्कार हैं। ये ऋषि-कवि सामान्य जीवन में से उभरकर बड़े हुए थे और इसलिए वे इस जमीन से जुड़े हुए हैं। वैदिक काव्य में प्रकृति के विभिन्न रूपों को देवता मानकर उनकी स्तुति काफी ज्यादा की गई है, पर अनेक सूक्त अलग तेवर के भी हैं, जिनमें से खास तेवरों वाले दो सूक्तों- भूमिसूक्त और सूर्या सावित्री का विवाहसूक्त हम पढ़ आए हैं और आज जबर्दस्त दार्शनिक स्वरूप वाले 'सृष्टिसूक्त' से हमारी जानकारी होना जरूरी है।

अन्य कुछ बातों के अलावा वेदों का मुख्य भाग देवताओं के स्वरूपों की अद्भुत कल्पनाओं से भरा पड़ा है। हजारों सालों तक ऋषि कवि देवताओं की कल्पना करने और उनका काव्यमय वर्णन करनेमें इतना मगन रहे कि सृष्टि के दार्शनिक विवेचन की ओर उनका ध्यान ही नहीं गया। दीर्घतम मामतेय जैसे महाकवियों ने अपने प्रसिद्ध 'अस्यवामीय सूक्त' में दर्शन के साथ कुछ बुद्धिविलास जरूर किया था, पर इस बड़े प्रतिभावान कवि की ऊर्जा भी मुख्यतम देवताओं के विवरण-चित्रण में ही खर्च हो गई, पर जैसे जैसे हम वैदिक मन्त्र रचना की अन्तिम सदियों की ओर आते हैं तो पाते हैं कि देवताओं का स्वरूप वर्णन पुराना और बासी हो चला है, इसलिए कई मेधावी ऋषियों ने देवताओं के पारम्परिक वर्णनों को छोड़ खुद को दूसरे तरह के काव्य में खपा दिया। भूमिसूक्त और विवाहसूक्त जैसे सृजन इसी गैर परम्परागत वैदिक अभिव्यक्ति का बेजोड़ नमूना है।

दार्शनिक सूक्तों की रचना भी तीन हजार वर्षों के वैदिक काल के आखिरी आखिरी दशकों में हुई मानी जाती है और इसमें कोई शक नहीं कि इस दौर में बेजोड़ दार्शनिक सूक्त लिखे गए। पुरुषसूक्त हो या हिरण्यगर्भ सूक्त, वाक् सूक्त हो या काल सूक्त या फिर सृष्टि सूक्त, ये सभीदार्शनकि प्रतिभा के वैदिक चमत्कार उन्हीं आखिरी-आखिरी दशकों में देखने को मिले। इसका कारण भी है। इन्हीं सूक्तों में कुछ दशक बाद, अर्थात् तीन हजार वर्षों के वैदिक काल के अन्तिम दशक में कृष्ण ने कुरुक्षेत्र में अर्जुनके साथ दार्शनिक सम्वाद किया, जिसे हम गीता के नाम से जानते हैं। गीता में इतने ज्यादा मत-मतान्तरों को छू दिया गया है कि मानने में कोई हर्ज नहीं कि तब तक अनेक प्रकार के दार्शनिक मतवाद भारत के अलग-अलग हिस्सों में चलन में आ गए थे। गीता के तत्काल बाद ब्राह्मण ग्रन्थों की रचना होने लगी थी, जिसमें वैदिक कर्मकाण्ड

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

गुण्डागर्दी का विरोध होना चाहिये

उत्तराखण्ड राज्य बनने के बाद से इस प्रदेश में जितनी तेजी से नेतागर्दी बढ़ी है उसी अनुपात में गुण्डागर्दी दिखाई दे रही है। अपने लाभ के लिये यह नेता किसी की भी बलि लेने को तैयार से दिखाई दे रहे हैं। ये कब क्या बयान दे डालें, कब किसके खिलाफ बोल दें, कब पार्टी बदल देंगे, इनका कोई पता नहीं है। इन्हीं सारे लक्षणों को त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव में खूब देखा गया। जिला पंचायत अध्यक्ष व ब्लाक प्रमुख चुनाव के लिये दबंगता दिखाने वाले यह भूल गये कि उन्हें आम जनता ने बड़ी उम्मीदों के साथ अवसर दिया है। ऐसे में साफ हो गया कि ज्यादातर वह लोग इन पदों पर आना चाहते हैं जिनके बड़े धन्धे-फन्दे हैं और वह अपनी सुरक्षा के लिये पद और पार्टी चाहते हैं। इन्हें आम जनता से कोई सरोकार नहीं है। वह जानते हैं कि जनता को किस तरह की बातें बनाकर टहलाया जा सकता है।

नैनीताल जिला पंचायत अध्यक्ष के लिये मतदान के दौरान नैनीताल में जो हालात बने वह उत्तराखण्ड के इतिहास में बड़ी घटना है। भाजपा-कांग्रेस के बड़े नेताओं का जिपं चुनाव में लिप्त होने से लेकर सदस्यों को अपने पक्ष में करने तक जितना हंगामा हुआ वह सब जनता देखती रही। पुलिस और प्रशासन के बंधे और खुले हाथ भी सबने देखे। पाँच सदस्यों को जिस प्रकार एक पक्ष ले जा रहा था, उसका वायरल वीडियो भी खूब देखा गया। इस पर कांग्रेस ने प्रदर्शन करते हुए कहा कि वह उनके पक्ष के सदस्य थे जिनका खुलेआम अपहरण किया गया है। दूसरी ओर भाजपा का कहना था कि अपनी हार देख कांग्रेस हंगामा करने लगी है। सड़क पर दो दिन तक प्रदर्शन के बाद भी पुलिस गायब हो चुके पाँच जिला पंचायत सदस्यों को नहीं तलाश सकी जबकि वह भाजपा के सोशल मीडिया पेज पर अपना बयान देते हुए दिखाई दिए। उन्होंने कहा कि अपनी मर्जी से घूमने निकले हैं। अब ये अपहरण हुआ या गायब हुए या सबकुछ तय था जैसे कई प्रश्न हैं लेकिन कुल मिलाकर गुण्डई छाई रही। लोकतंत्र में इतना हंगामा कि छीनाझपटी होने लगी। पूरा प्रशासन कांप उठा और न्यायालय को सख्ती दिखानी पड़ी। दादागिरी की घटनाएं अन्य जगह भी हुई। नैनीताल में सबसे ज्यादा बबाल मचा इसलिए इसकी चर्चा की जा रही है।

उत्तराखण्ड राज्य क्या इसीलिए बना था कि हम अपने अधिकारों के लिये भटकते रहेंगे और दबंगों का गिरोह हमारे ऊपर डण्डे बरसाएगा? प्रदेश में जिस प्रकार की अराजकता दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है यह बेहद गम्भीर बात है। बढ़ती जा रही गुण्डई को देखते हुए अधिकांश इसलिए चुप हो चुके हैं कि उन्हें पता है कहीं कोई सुनवाई के बदले उल्टा किसी प्रकार की उलझन हो सकती है। अराजक तत्व इसी बात का मौका उठाते हुए बड़े नेताओं के आस-पास घेरा बना चुके हैं। यह बहुत ही खतरनाक हालात हैं। गुण्डई का विरोध होना चाहिये चाहे वह किसी भी दल नेता हो।

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

बब्बर खालसा नेटवर्क का भंडाफोड़

चण्डीगढ़। पंजाब पुलिस ने दावा किया है कि उसने पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई समर्थित बब्बर खालसा इन्टरनेशनल के आतंकी नेटवर्क का भण्डाफोड़ करते हुए राजस्थान में 5 लोगों को गिरफ्तार किया है। इन्हें स्वतंत्रता दिवस पर हमले करने की जिम्मेदारी दी गई थी।

दलाई लामा से मिलने पर निलम्बित

बीजिंग। चीन ने कहा कि उसने तिब्बती आध्यात्मिक नेता दलाई लामा से हाल में मुलाकात के कारण वह चेक गणराज्य के राष्ट्रपति पेत्र पावेल के साथ सभी प्रकार के सम्बन्ध समाप्त करने का निर्णय लिया है। चीन के विदेश मंत्रालय ने यह भी कहा कि पावेल और दलाई लामा की मुलाकात को लेकर बीजिंग ने चेक गणराज्य के समक्ष राजनयिक विरोध दर्ज कराया है।

ईरान को प्रतिबन्धों की धमकी

बर्लिन। ईरान के अपने परमाणु कार्यक्रम पर पश्चिमी देशों के साथ वार्ता इस महने के अन्त तक पुन: शुरू करने और संयुक्त राष्ट्र परमाणु निगरानी संस्था के साथ सहयोग करने की समय सीमा करीब आने के बीच ब्रिटेन, फ्रांस और जर्मनी के शीर्ष राजनयिों ने ईरान पर पुन: प्रतिबन्ध लगाने की धमकी दी है।

शेख हसीना के खिलाफ भ्रष्टाचार का केस

ढाका। बांग्लादेश की अपदस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना, उनकी भतजी अजमीना सिद्दीक सहित 17 के खिलाफ आवास भूखण्ड घोटाले के मामले में ढाका की एक अदालत ने शिकातकर्ता के बयानों के साथ मुकदमा शुरू किया। लन्दन में रहने वाली सिद्दीक ब्रिटेन की राजधानी के हैमस्टेड ओर हाईगेट निर्वाचन क्षेत्र से सत्तारूढ़ लेवर पार्टी के टिकट पर संसद चुनी गई थी।

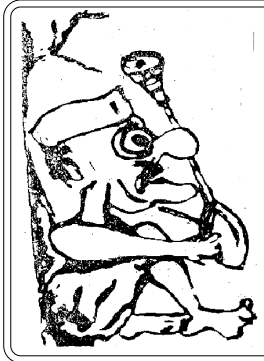

फसक

दाज्यू, खूब गदरगोल हो रहा ठैरा

नंग्योई करने वालों को कोई फर्क नहीं पड़ रहा है बल

दाज्यू, प्रदेश में मचे गदरगोल से हैरानी तो नहीं हो रही बल्कि डर भाग चुका है। डर के होगा भी क्या? सुखवन्त कह रहा है- 'चकमक बने रहो, हल्दी-मसाला तैयार मिलेगा।' दाज्यू, नंग्योई करने वालों को कोई फर्क नहीं पड़ रहा है बल। अपने सीएस धामी ज्यू के विधानसभा क्षेत्र के टनकपुर कालेज में महिला कर्मचारी ने रोते हुए मीडिया के सामने बताया कि बड़े बनने वाले गन्दी नजर रखते हैं। उनका उत्पीड़न किया गया है। दाज्यू, कहते हैं शहर को बर्बाद करने के लिये एक-दो शैतान ही बहुत होते हैं। लगता है टनकपुर में मशाण पूजना होगा। बेचारी महिला कर्मचारी के आँसू लगेंगे।

रामनगर के पीरुमदारा में युवती को छेड़ने के आरोप में तीन युवकों पर मुकदमा दर्ज हुआ है। कपड़े सिलवाने जा रही बालिका के साथ ये बदतमीजी कर रहे थे बल। दाज्यू, खूब गदरगोल हो रहा ठैरा।

प्रदेश सरकार ने सम्वेदनशील क्षेत्रों में नए निर्माण पर रोक लगा दी है। सीएम सैप कह रहे हैं कि प्राकृतिक आपदाओं के लिहाज से सम्वेदनशील इलाकों को तत्काल चिन्हित करें। दाज्यू, आपदा भी कई प्रकार की होने वाली हुई। क्या किया जाए? किच्छा ग्राम गऊघाट कठर्रा में इस बार के विजयी प्रधान एवं पूर्व ग्राम प्रधान के समर्थकों में लट्ठ चल गये। गाँव में बहुत तनाव है। पुलिस ने बीच में कूदकर मामला थाम रखा है। हमारे मुनस्यारी में ब्लाक प्रमुख बनने की खुशी में जुलूस निकला लेकिन वहाँ भी गदरगोल मच गई। सड़क पर भटम भटम बम-पटाखे और लात-घूंसे.....। दाज्यू, गाना भी बज रहा था- 'सावरमती के सन्त तूने कर दिया कमाल, रघुपति राघव राजा राम'।

दाज्यू, देश-प्रदेश ही नहीं, पूरी दुनिया में गदरगोल मची है। अब अमेरिका कह रहा है कि वह आतंकवाद से निपटने के लिये पाकिस्तान का सहयोग करेगा। आप समझ ही रहे होंगे कि सारा मामला बलुचिस्तान को लेकर है। याने जो कहना नहीं मानेगा वह आतंकी। अपनी सारी हरकत पाक। यही सब देख-सुनकर खोपड़ी गरम हो रही है। नंग्योई है तो है, क्या करोगे? फिर वही रास्ता बचता है- बम पटाखों का। जिसमें नुकसान ज्यादा है इस दुनिया का। दाज्यू, नैनीताल जिला पंचायत अध्यक्ष चुनाव में कितना धुंआ उठा सबको पता है। मतदान के दिन गायब हो गये 5 जिला पंचायत सदस्य कह रहे हैं, वह अपनी मर्जी से घूमने गये थे। दाज्यू, तभी तो कह रहे हैं कि गदरगोल है सब। अपने महेन्द्र भट्ट का कहा गया खूब वायरल हुआ है जिसमें वह कह रहे हैं- 'चुनाव में गोलियां चलती रहती हैं।' बाद में सफाई देते हुए बोले- 'एआई का इस्तेमाल कर किसी ने उनका फर्जी ऑडियो चलाया है। उन्होंने ऐसा कुछ नहीं कहा।'

-तुम्हारा भुली झकरुवा

भादो मास में.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

लेकर तिब्बत तक फैली हैं। इसके अलावा यहाँ प्रत्येक गाँव की अनगिनत कथाएं व इतिहास मौजूद ळै। सीपू गाँव महादेव गुफा के नाम से जाना जाता है। जिसमें शिव गुफा अभी भी विद्यमान है। मान्यता है कि इसमें शिव जी ने ध्यान किया था। सर्प रूप में शिव गणों के पदचिन्ह बताए जाते हैं।

दारमा घाटी के से आदि कैलास , कुटी, ज्योलिंग का रास्ता विदांग होते हुए 'सिन ला' दर्रा से निकलता है। पूर्व से ही यह दर्रा ट्रेकिंग के लिये सबसे उत्तम माना जाता रहा है। सीपू गाँव से जोहार (मिलम) के लिए भी ट्रेकिंग मार्ग है जिसमें अभी भी साहसिक यात्री जाते हैं। इसके अलावा विदांग से दर्शनीय स्थान होते हुए ट्रेकिंग होती है। यही मार्ग तिब्बत व्यापार के समय दारमा वासियों के लिये खुलता था। इस घाटी की सुन्दरता अगस्त माह से चरम में पहुँचने लगती है जब चारों ओर हरियाली बुग्यालों से लेकर वन फूल बिछ जाते हैं। कट्टू के पौधे, ब्रह्म कमल, भोजपत्र, जड़ीबूटियों के पौंध मोहक बनकर महकते हैं। वर्तमान समय तो होमस्टे और यात्रा सुविधा के कारण बहुत सरल हो चुका है। तो आइए स्वागत है। (सेनि.आईआरएस)

जौलजीवी ज्वालेश्वर में देवी भागवत, अस्कोट मल्लिकार्जुन में महाशिवपुराण

जौलजीवी। ज्वालेश्वर महादेव मन्दिर में देवी भागवत कथा का भव्य आयोजन कलश यात्रा के साथ हुआ। जौलजीवी बाजार से होते हुए कलश यात्रा संगम तट पर पहुंची और फिर ज्वालेश्वर मन्दिर में कार्यक्रम हुआ।

भक्तिमय वातावरण में ज्वालेश्वर गूंज उठा। व्यास विष्णुदत्त भट्ट भागवत कथा का महात्म्य सुनाया। मुख्य यजमान गंगा सिंह वृजवाल सपत्नीक, गणेश जी मनोज भट्ट, रोशन भट्ट, हेमलता भट्ट, मनीष भट्ट, डॉ. मदन पाल, भूपाल चन्द, दिनेश वर्मा, विक्रम पाल, सुरेन्द्र पतियाल, नारायण चन्द, ललित मोहन अवस्थी, उपेन्द्र पाल, ललित, प्रेम बिष्ट सहित तमाम लोग सहयोगी रहे।

उधर अस्कोट के मल्लिकार्जुन महादेव मन्दिर में 11 दिवसीय शिव महापुराण कथा का हवन व विशाल भण्डारे के साथ समापन हुआ। हवन यज्ञ पं. एन.डी.पन्त व पं. गिरीश पन्त ने सम्पन्न करवाया। कथा व्यास आचार्य योगेन्द्र जोशी, मुख्य यजमान ओढ़ीगांव निवासी गोविन्द पाल सपत्नीक रहे।

घोड़ानाला को भूमिगत कराने की मांग

लालकुआ/हल्द्वानी। अखिल भारतीय किसान महासभा बिन्दुखत्ता ने घोड़ानाला को भूमिगत कराने एवं मगरमच्छों से राहत दिलाने की मांग को लेकर जबर्दस्त प्रदर्शन किया। सात सूत्रीय मांगों को लेकर तहसील प्रशासन के द्वारा डीएम व सीएम को ज्ञापन प्रेषित किया गया।

ज्ञापन में कहा गया है कि पेपर मिल लालकुआ से निकलने वाले केमिकल युक्त पानी से क्षेत्र के राजीव नगर, घोड़ानाला, पटेलनगर, शास्त्रीनगर तृतीय, सत्रह एकड़, आदर्शनगर आदि में रहने वाली जनता कई तरह की बीकारियों का सामना कर रही है। प्रदूषित नाले के कारण भूमिगत पेयजल भी पीने योग्य नहीं रह गया है। नाले में बड़ी संख्या में मौजूद मगरमच्छों के आतंक से नाले के आस-पास रह रहे लोग पीड़ित हैं। कई पालतू पशु मगरमच्छों का शिकार बन चुके हैं। महासभा के प्रदेश अध्यक्ष आनन्द सिंह नेगी ने कहा कि जनता को प्रशासन व सरकारों के उदासीन रवैये का खामियाजा उठाना पड़ रहा है। भाकपा मलो नेता कैलाश पाण्डे ने नाराजी व्यक्त की।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

चिन्ता

कैसे चलेंगे उत्तराखण्ड के स्कूल?

डॉ.हरीश चन्द्र अन्डोला

किसी भी समाज और राष्ट्र का भविष्य उसके बच्चों पर निर्भर करता है और बच्चों का भविष्य उनकी स्कूली शिक्षा पर टिका होता है। वर्ष 2027 में होने वाले विधानसभा चुनाव को लेकर राज्य में निर्वाचन नियमावली की तैयारी एवं मतदाता सूची पुनरीक्षण कार्य प्रारम्भ हो गया है। इस कार्य में करीब दस हजार से अधिक शिक्षकों को ड्यूटी के लिए चुना गया है। इतनी बड़ी संख्या में शिक्षकों को मतदाता सूची पुनरीक्षण कार्य में लगाने से स्कूल शिक्षा व्यवस्था पटरी से उतर सकती है। पहले ही राज्य में कक्षा एक से 12वीं तक में शिक्षक से लेकर प्रधानाचार्य तक के 12318 पद रिक्त चल रहे हैं।

शिक्षकों का मानना है कि चुनावी प्रक्रिया जितनी आवश्यक है, उतनी ही आवश्यक प्राथमिक शिक्षा भी है। यदि शिक्षक लगातार प्रशासनिक और निर्वाचन ड्यूटी में लगे रहेंगे तो कक्षा में बच्चों को शिक्षा देने वाला ही कोई नहीं रहेगा। ऐसे में समय रहते राज्य सरकार और निर्वाचन आयोग को संतुलित और व्यावहारिक नीति अपनानी होगी, जिससे लोकतंत्र और शिक्षा दोनों के हित सुरक्षित रह सकें। निर्वाचन आयोग की ओर से बूथ लेवल आफिसर (बीएलओ), निर्वाचन रजिस्ट्रेशन अधिकारी (एआरओ), सहायक निर्वाचन रजिस्ट्रेशन अधिकारी और सुपरवाइजरों के रूप में शिक्षकों की तैनाती ने स्कूलों में पढ़ाई को संकट में डाल दिया है। शिक्षक अब डेढ़ साल से भी अधिक समय के लिए विद्यालयों से ज्यादा समय बाहर रहेंगे, जिससे छात्रों की पढ़ाई प्रभावित हो सकती है।

राज्य की शिक्षा व्यवस्था पहले से ही रिक्त पदों के चलते जूझ रही है। बेसिक शिक्षकों के 2109 पद रिक्त हैं, हेडमास्टर के 496 पद खाली हैं। उच्च प्राथमिक विद्यालयों में प्रधानाध्यापक एवं सहायक अध्यापक के 733 पद रिक्त हैं। इण्टर कालेजों में एलटी ग्रेड शिक्षकों के 3055 पद, प्रवक्ता के 4745 पद एवं प्रधानाचार्य के 1180 पद खाली हैं। 2501 प्राथमिक

विद्यालय ऐसे हैं, जिन्हें मात्र एक शिक्षक है। ऐसे में दस हजार से अधिक शिक्षकों को बीएलओ जैसे कार्यों में लगा देना, शिक्षा की गुणवत्ता और छात्रों के भविष्य दोनों के लिए ठीक नहीं है।

उधर माध्यमिक शिक्षा निदेशक ने कहा कि यह प्रशासनिक स्तर की प्रक्रिया है और आवश्यक भी है। शिक्षा व्यवस्था प्रभावित न हो इसका भी ध्यान रखा जाएगा। राजकीय शिक्षक संघ के प्रान्त महामंत्री ने कहा कि पूर्व घोषित शासनादेश की अनदेखी है। उसमें शिक्षकों को केवल मतदान, मतगणना और जनगणना कार्य के अलावा अन्य गतिविधियों में शामिल नहीं करने का निर्णय हुआ था। भविष्य के लिए तैयार स्कूलों की यह पहल केवल एक नारा नहीं, बल्कि एक व्यापक सोच और दीर्घकालीन रणनीति है।

अब सवाल केवल स्कूलों को सजाने-संवारने का नहीं, बल्कि उनमें सीखने का वातावरण विकसित करने का है। सरकार, उद्योग और समाज- जब ये तीनों मिलकर एक बच्चे के भविष्य के लिए काम करते हैं, तब बदलाव की शुरुआत होती है। अब यह उत्तराखण्ड की जिम्मेदारी है कि वह इस कार्य को सिर्फ कागज़ों में नहीं, जमीन पर उतरे, बच्चों की आंखों में सपनों के साथ। यह हमें एक लाख टके के सवाल पर लाता है हम इसे कैसे हासिल करें।

विगत वर्ष चुनाव से पूर्व शिक्षकों की ड्यूटी लगाए जाने से शिक्षण कार्य प्रभावित हो रहा है। इसको देखते हुए हाईकोर्ट ने सरकारी स्कूलों के शिक्षकों को आकस्मिक सेवाओं, चुनाव आदि को छोड़कर अन्य किसी कार्यों में ड्यूटी न लगाए जाने के आदेश दिए।

चम्पावत में बनेगा रजत जयंती पार्क

चम्पावत। जिला मुख्यालय में देवभूमि रजत जयन्ती पार्क का निर्माण किया जायेगा। पार्क के लिये प्रत्येक निकाय से प्रस्ताव मांगे गये थे। चम्पावत में 2620 वर्ग मीटर पर यह निर्मण होना है। पालिका के ईओ भरत त्रिपाठी ने बताया कि नागनाथ बार्ड के नागार्जुन पार्क में आधुनिक पार्क का निर्माण किया जायेगा।

क्लस्टर विद्यालय को लेकर प्रदर्शन

डीडीहाट। प्रदेश सरकार की योजना क्लस्टर विद्यालय का विरोध तेज होता जा रहा है। रा.इ.कालेज चौबाटी को क्लस्टर योजना में शामिल किये जाने पर क्षेत्रवासी उग्र हो चुके हैं। विरोध प्रदर्शन करते हुए कहा कि इस योजना को तत्काल प्रभाव से रद्द किया जाए।

डीडीए समाप्ति की मांग पर प्रदर्शन

अल्मोड़ा। डीडीए समाप्त नहीं होने पर सर्वदलीय संघर्ष समिति का रोष बढ़ता जा रहा है। डीडीए समाप्ति की मांग को लेकर चौघानपाटा स्थित गांधी पार्क में प्रदर्शन किया गया। डीडीए को पहाड़ की भौगोलिक स्थिति के विपरीत बताते हुए समिति लम्बे समय से आन्दोलन कर रही है। समिति का कहना है कि डीडीए को हटाकर नगर निकायों को प्राधिकरण के अधिकार दिये जाने चाहिये।

काण्डा आईटीआई में कुल 13 ने लिया प्रवेश

बागेश्वर। कपकोट और काण्डा आईटीआई में अनुदेशकों की कमी से युवाओं में तकनीकी शिक्षा के प्रति अरुचि है। इन दोनों संस्थानों में पहले चरण के प्रवेश में मात्र 13 अभ्यर्थियों ने प्रवेश लिया। 123 रिक्त सीटों के लिये दूसरे चरण की प्रवेश प्रक्रिया शुरू की गई है।

धराली में राहत के लिये जुटे हैं

उत्तरकाशी। आपदा की मार से बुरी तरह घायल धराली क्षेत्र में राहत के लिये प्रशासन जुटा है। साथ ही समाजसेवी भी सहयोग में आगे आ रहे हैं। गंगोत्री धाम के प्रमुख पड़ाव धराली में 5 अगस्त को खीरगंगा में आई विनाशकारी बाढ़ ने जो तबाही मचाई थी उसके गहरे घाव दिखाई दे रहे हैं। अभी तक लापता लोगों की खोजबीन, प्रभावितों के रहने-खाने स्वास्थ्य संचार, बिजली, पानी की व्यवस्था के लिये प्रशासन टीम जुटी है। आपदा में फंसे करीब ढेड़ हजार तीर्थ यात्रियों व स्थानीय लोगों को सेना और यूकाडा के हेलीकाप्टरों की मदद से निकाला जा चुका है। वैज्ञानिकों का दल आपदा के कारणों का पता लगाने में जुटा है।

उत्तराखण्ड की राजनीति में उबाल

लोहाघाट ब्लाक प्रमुख और साथियों के खिलाफ तोड़फोड़ का मुकदमा दर्ज

लोहाघाट। प्रदेश में त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव क्या हुए, राजनीति में उबाल है। जिला पंचायत अध्यक्ष और ब्लाक प्रमुख चुनाव में देखी गई दादागिरी के बाद से तो लगातार घटनाएं बनी हुई हैं।

लोहाघाट नगर के समीप हथरंगिया निवासी शिक्षक नेता के घर तोड़फोड़ करने, धमकाने के आरोप में पुलिस ने नवनिर्वाचित ब्लाक प्रमुख सहित दस लोगों पर मुकदमा दर्ज किया है। राजकीय प्राथमिक संघ चम्पावत के जिलाध्यक्ष गोविन्द बोहरा की पत्नी भागीरथी बोहरा ने लोहाघाट थाने में तहरीर देकर ब्लाक प्रमुख महेन्द्र सिंह ढेक और उनके साथी देवेन्द्र बोहरा, गिरीश ढेक, दिनेश महरा, सतीश महरा, गिरीश महरा, निर्मल फर्त्याल, अमित फर्त्याल, शिवराज सिंह बोहरा, गौतम सिंह मेहता व अन्य अन्य निवासी लोहाघाट के ने उनके आवास पर आकर मुख्य गेट खोलकर मुझे और मेरे परिवार को जान से मारने की धमकी दी है। इसके साथ ही उन्होंने घर का मुख्य दरवाजा भी तोड़ दिया है। जिसकी सीसीटीवी फुटैज भी उनके पास है। आरोप लगाया कि अराजकतत्व हथियार लहराते हुए उनके शयन में भी घुस गये, जिससे उनके साथ उनके पति, बच्चे डरकर दूसरी मॉजिल में जा छुपे। इन लोगों ने घर का सामान भी तोड़ा और जान से मारने की धमकी दी है।

प्राथमिक शिक्षक संघ जिलाध्यक्ष और उनकी पत्नी भागीरथी बोहरा ने आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग उठाई। पुलिस मामले की जाँच में जुट चुकी है। इस घटना के बाद से आम जनता में चर्चा छिड़ी है- प्रदेश में क्या हो रहा है।

ज्योतिष की बातें- 243

30 अगस्त 2025 को बुध मित्रराशि सिंह में प्रवेश करेगा। वहाँ पर बुध केतु से पीड़ित रहेगा तो सूर्य से युति करके बुधादित्य योग भी बनाएगा। अत: कुल मिलाकर बुध बली रहेगा। अगले 17 दिन बुध बुद्धि, व्यापार, लेखन, साहित्य आदि अपने कारक विषयों में कर्क, वृषभ, मीन, मकर, वृश्चिक व तुला राशि के जातकों को अत्यन्त शुभफल प्रदान करेगा। शेष राशियों के लिए भी बुध सामान्य फलदायक रहेगा।

हरितालिका तीज- भाद्रपद शुक्लपक्ष चतुर्थीयुता तृतीया को हरितालिका तीज का व्रत किया जाता है। तद्नुसार मंगलवाल 26 अगस्त 2025 को हरितालिका पर अविवाहित लड़कियाँ योग्य वर की प्राप्ति हेतु व्रत करेंगीं।

गणेश जयन्ती- भाद्रपद शुक्लपक्ष मध्याह्न व्यापिनी चतुर्थी में बुधवार 27 अगस्त 2025 को श्रीगणेश जयन्ती का पर्व मनाया जाएगा। इस दिन महाराष्ट्र आदि प्रान्तों में ग्यारह दिनों के लिए गणपति मूर्ति की स्थापना सामाजिक रूप से हर्षोल्लास से की जाती है।

ऋषि पंचमी- भाद्रपद शुक्लपक्ष पंचमी मध्याह्न व्यापिनी तिथि, तदनुसार बृहस्पतिवार 28 अगस्त 2025 को ऋषि पंचमी का पर्व मनाया जाएगा।

राधा अष्टमी- भाद्रपद शुक्लपक्ष अष्टमी तिथि मध्याह्न में अभिजित् मुहूर्त में श्री राधा का जन्म हुआ था तदनुसार रविवार 31 अगस्त 2025 को राधा अष्टमी पर्व मनाया जाएगा।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 133

मतदाता सूची का औचित्य

किसी भी चुनाव में वोट डालते समय मुझे वोटर कार्ड की आवश्यकता कभी नहीं पड़ी। आजकल यह चर्चा का विषय है कि मतदाता सूची में बहुत गड़बड़ियाँ हैं। जैसे- 1. कहीं-कहीं तो एक ही मकान में 40-50 मतदाता रहते हैं। इसमें हो सकता है कि भूल-चूक हो गम्र हो अथवा जानबूझकर किसी के द्वारा गलत कार्य किया गया हो । दोनों बातें हैं ।

2. कहीं-कहीं बहुत से मतदाताओं के पिता का नाम एक ही लिखा हुआ है । इसमें भी भूल-चूक हो सकती है। आजकल बहुत कुछ आटोमेटिक सिस्टम होने के कारण एक ही क्लिक में इस तरह की त्रुटि एक साथ हो सकती है और यह गलती जानबूझकर भी हो सकती है ।

3. लाखों लोगों के वोट दो-दो जगह पर बने होते हैं यह भी स्वाभाविक ही है क्योंकि व्यक्ति प्राय: मुख्य निवास स्थान से आजीविका के लिए बहुत दूर चला जाता है इस कारण दो-दो जगह वोट बन जाते हैं। बार-बार मकान बदलने के कारण पता गलत भी अक्सर हो जाता है।

4. यह बात भी अक्सर सुनने में आती है कि मृतकों के नाम मतदाता सूची में जोड़े गए हैं। यह तो बिल्कुल ही स्वाभाविक है क्योंकि 50 हजार लोगों की मृत्यु इस देश में प्रतिदिन होती है। इस कारण लाखों मृतकों के नाम भी सूची में बने रह सकते हैं।

मैं सोचता हूँ कि मतदाता सूची में कितनी भी गड़बड़ियाँ हों उससे मतदान पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। जब एक बार वोट डालने के बाद आदमी की अंगुली में अमिट स्याही लगा दी जाती है तो फिर वह दूसरा वोट कहीं डाल ही नहीं सकता ।

हर व्यक्ति का वोट देने का अधिकार है चाहे वह निवास स्थान पर मतदान करें या अन्य किसी स्थान पर। मेरे विचार से एक भारतीय नागरिक को अपना पहचान पत्र दिखाने के बाद कहीं भी मतदान करने की अनुमति होनी चाहिए। किसी भी कारण से यदि उसे मतदान से रोका जाता है तो यह उसके मताधिकार का हनन है।

-ओंकार नाथ कोष्टा

जोहार मिलन केन्द्र में आयोजन

कवीन्द्र बृजवाल का प्रेरक व्याख्यान

हल्द्वानी। जोहर मिलन केन्द्र के सभागार में एक मोटिवेशनल स्पीच (प्रेरक व्याख्यान) कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मोटिवेशनल स्पीकर के रूप में कवीन्द्र सिंह बृजवाल ने मुख्य रूप से विद्यार्थियों को स्किल बिजनेश ग्रोथ करियर डेवलपमेंट सहित जानकारी दी।

श्री बृजवाल जो कॉर्पोरेट के सर्टिफाइड ट्रेनर और मोटिवेशनल स्पीकर हैं इन्हें 17 साल का कॉर्पोरेट में लाइव स्किल और मोटिवेशन स्पीकर और ट्रेनिंग डेवलपमेंट के कार्य में लगे हुए हैं।

मिलन केन्द्र में हुए कार्यक्रम में महिला, पुरुषों व विद्यार्थियों ने खासी संख्या में भाग लिया। अपने प्रेरक व्याख्यान में श्री बृजवाल ने विद्यार्थियों के डेवलपमेंट लाइफ स्किल बिजनेस ग्रोथ करियर डेवलपमेंट और फिजिकल फिटनेस पर रुचिकर जानकारी दी। साथ ही भविष्य में भी इस तरह के कार्यक्रम और करने के लिए सलाह दी।बताते चलें कि कवीन्द्र मोटिवेशनल स्पीकर के साथ-साथ अल्ट्रा मैराथन के धावक भी हैं जिन्होंने कई मैराथन में भाग लिया जिसमें मुख्य रूप से 100 किलोमीटर का मैराथन जैसलमेर से लोंगेवाला तथा दो बार साउथ अफ्रीका के डरबन से 90 किलोमीटर का मैराथन में सफल रूप से लक्ष्य हासिल किया।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

चुनाव की ये भड़ास अभी निकलती रहेगी

नैनीताल की घटना लोकतंत्र पर तमाचा है। किसी भी तरह की गुण्डागर्दी को सजा मिलनी चाहिये

द्वाराहाट और बेतालघाट की अराजकता भी कम नहीं है

आरोप- बीजेपी एजेंट बनकर पंचायत चुनाव को प्रभावित करते रहे

नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्या के होटल पर पुलिस का छापा

पुलिस की भूमिका को लेकर गुस्सा फूटा, बाजपुर में प्रदर्शन

कांग्रेसी नेता लाखन सिंह नेगी के प्रतिष्ठान सील

विधायक सुमित हृदयेश के होटल में भी छापेमारी

रामनगर में भाजपाईयों का हंगामा और प्रशासन पर आरोप

तराई में पुलिस के साये में चुनाव निपटाया गया। भिड़ते रहे समर्थक

जिन जिपं सदस्यों के अपहरण की बात पर बबाल मचा था वह बोले- अपनी मर्जी से घूमने गये थे

पुलिस ढूंढने में नाकाम, भाजपा के सोशल मीडिया पेज में दिखाई दिये गायब जिपं सदस्य

नैनीताल भाजपा जिला अध्यक्ष सहित कई के खिलाफ मुकदमे दर्ज

कांग्रेस के चार नेताओं के विरुद्ध भी मामला दर्ज किया

इन्दिरा हृदयेश के एहसानों को याद दिलाया विधायक सुमित ने

सांसद अजय भट्ट ने अराजकता और अभद्रता की कड़ी निन्दा की

गंगोलीहाट में शिक्षक नेता का ऑडियो वायरल, आक्रोश

मुनस्यारी में हुई अराजकता से चिन्तित हैं क्षेत्रवासी

उत्तराखण्ड में त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव सम्पन्न हो गये लेकिन इसकी भड़ास अभी निकलती रहेगी क्योंकि जितना कठिन चुनाव को नेताओं ने बना दिया है वह अब आड़ा ही आड़ा होगा। हर हाल में कुर्सी कब्जाने की कोशिश करते नेता और जूझ रहे ईमानदार लोगों के बीच कोई रास्ता कभी तो निकलेगा ऐसी उम्मीद हमेशा बनी रहनी चाहिये। फिलहाल इस पूरे पंचायत चुनाव के बहाने सत्ता का नशा और सत्ता पर न होने का दर्द साथ-साथ दिखाई दिया। पुलिस की धुंआधार कार्रवाई और नेताओं का तालमेल और एक-दूसरे को गिराने का कारनामा भी कम नहीं हुआ था। यह सिलसिला जारी है।

जिला पंचायत अध्यक्ष पद के चुनाव के दिन जिस प्रकार की गुण्डागर्दी नैनीताल में हुई वह लोकतन्त्र पर तमाचा है। पूरे मामले पर उच्चन्यायालय ने सुनवाई करते हुए लताड़ा। दोबारा चुनाव को कहा और पूरी जाँच के आदेश दिये। जिपं चुनाव को लेकर ऐसा नजारा पहली बार देखा गया कि पुलिस जगह-जगह बेरिकेडिंग लगाकर भारी संख्या में तैनात थी और नेतागर्द खुलेआम गुण्डई पर उतर आए। जिपं के सदस्यों को अपने पक्ष में लेने को लेकर भाजपा और कांग्रेस के छोटे-बड़े नेताओं की भिड़न्त से आम जनता हैरान है। इससे यह साफ दिखाई दे रहा है कि दबंगता और गैंग बनाकर चलने वाले समाज को किस ओर ले जा रहे हैं।

न्यायालय पुलिस के रवैये से बहुत नाराज था, ऐसे में जिलाधिकारी वन्दना ने बात संभाली। फिर पता चला देर रात्रि करीब 3 बजे गायब 5 जिपं सदस्यों को छोड़ शेष जिनके मत पड़ चुके थे, उनकी गणना कर ली गई। परिणाम की घोषणा न्यायालय के फैसले को देखते हुए नहीं की गई। लेकिन भाजपा की ओर से जश्न माहौल था और चर्चा होने लगी थी कि उनकी प्रत्याशी जीत चुकी है। अध्यक्ष के लिये मतदान के दिन से उठा बबाल लगातार चलता रहा और अगले दिन कांग्रेस के तमाम बड़े नेताओं ने थाना घेरते हुए नारेबाजी की। किच्छा विधायक तिलकराज बेहड़, खटीमा विधायक भुवन कापड़ी, पूर्व विधायक हरीश दुर्गापाल, हरीश पनेरू सहित कई इसमें शामिल थे। इसी दिन सायंकाल भाजपाई भी पुलिस से मिलने पहुँचे और कहा कि कांग्रेसी सरासर गलत आरोप लगा रहे हैं जबकि माहौल बिगाड़ने के बाद वह खीझ उतार रहे हैं। इस बीच सायं तक सोशल मीडिया पर भाजपा की ओर से उन पाँच जिला पंचायत सदस्यों को दिखाया गया जिनके अपहरण को लेकर इतना हंगामा मचा। ये सदस्य (डिकर सिंह मेवाड़ी, प्रमोद सिंह, तरुण शर्मा, दीप बिष्ट, विपिन सिंह) बोले- उन्हें सोशल मीडिया से जानकारी मिल रही है जबकि वह अपनी मर्जी से घूमने गये हैं। सवाल यह उठ रहा है कि जब घूमने ही जाना था तो मतदान वाले दिन इतनी छीना-झपटी क्यों हो रही थी? क्या कोई लोभ-लालच का मामला है? क्या डरा दिया गया है? सच्चाई तो यही पाँच जिला पंचायत सदस्य जानते हैं, जो कह रहे हैं कि सरकार के साथ मिलकर विकास करेंगे।

मामले में भाजपा जिलाध्यक्ष प्रताप बिष्ट, प्रत्याशी के पति आनन्द दर्मवाल, शंकर कोरंगा, चतुर बोरा, प्रमोद बोरा, प्रखर साह, बीबी भाकुनी, विशाल नेगी, पंकज नेगी, शुभम दर्मवाल और कोमल दर्मवाल समेत 11 के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया। यह कार्रवाई कांग्रेस की ओर से अध्यक्ष पद की उम्मीदवार पुष्पा नेगी, सदस्य जीशान्त कुमार और दो अन्य सदस्यों के परिजनों की तहरीर पर की गई। दूसरी ओर भाजपा की ओर से नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्या, विधायक समित हृदयेश सहित चार के खिलाफ

परिक्रमा

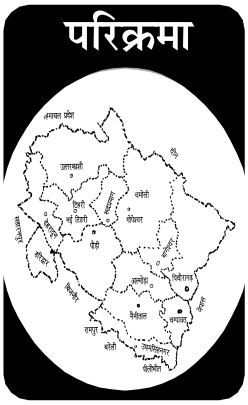

मामला दर्ज कराया गया।

इससे पहले पुलिस की छापेमारी कार्रवाई की भी खूब चर्चा हो रही है। नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्या ने आरोप लगाते हुए कहा कि पंचायत चुनाव में सरकार ने सभी सीमाएं पार कर दी। पुलिस के अधिकारी भाजपा कार्यकर्ताओं और एजेंट की तरह कार्य करते हुए कांग्रेस के क्षेत्र पंचायत सदस्य, ब्लाक प्रमुख प्रत्याशी, जिला पंचायत सदस्यों और प्रत्याशियों को डराने-धमकाने का का काम करते रहे। जगह-जगह जन प्रतिनिधियों के खिलाफ फर्जी मुकदमे दर्ज कराए जा रहे हैं। जिला पंचायत अध्यक्ष के चुनाव से ठीक पहले नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्या के छड़ायल, हल्द्वानी स्थित होटल में पुलिस का अचानक छापेमारी करना भी बेहद चर्चा में है। सीधा सा सवाल उठ रहा है कि क्या चुनाव में ही सारे हथकण्डे अपनाए जाएंगे। जिन बड़े नेताओं के होटल में कुकर्म का आरोप है उसमें क्या कार्रवाई हुई है। सोशल मीडिया भी भड़ास से भर चुका है।

हल्द्वानी के कांग्रेस विधायक सुमित हृदयेश के सौरभ होटल में छापेमारी हुई। कांग्रेस समर्थकों ने इसको सत्ता का दुरुपयोग और तानाशाही करार दिया। प्रशासन का कहना था यह सब स्वतंत्रता दिवस से पूर्व रूटीन जांच है।

इसी प्रकार नैनीताल जिला पंचायत अध्यक्ष पद के लिये कांग्रेस से ताल ठोक रही पुष्पा नेगी के पति पूर्व ब्लाक प्रमुख लाखन सिंह नेगी के प्रतिष्ठानों का सील होना भी लगातार चर्चा में है। उनका निर्माणाधीन स्कूल और भुजियाघाट स्थित होटल को सील कर दिया गया है। दोनों मामले में में उन्हें 15 दिन का समय देते हुए अतिक्रमण खुद हटा लेने या अपना पक्ष रखने को कहा गया। इससे पहले रामगढ़ के सिमायल रैक्वाल में तहसीलदार की अगुवाई में राजस्व विभाग की टीम ने लाखन नेगी के बन रहे स्कूल का निरीक्षण किया। शिकायत मिली थी कि स्कूल सरकारी भूमि पर बनाया जा रहा है। टीम को ग्रामीणों के आक्रोश का सामना करना पड़ा। अगले दिन स्कूल प्रबन्धन की ओर से भवाली पुलिस को जाँच टीम के खिलाफ तहरीर सौंपी गई। जबकि प्रशासन की ओर से सरकारी कार्य में बाधा डालने के आरोप में लाखन और अन्य पर मकदमा दर्ज कराया गया। सांसद अजय भट्ट ने हुई अराजकता और अभद्रता की कड़ी निन्दा की है। कहा लोकतन्त्र में गुण्डागर्दी का कोई स्थान नहीं है।

रामनगर में मतगणना के दौरान भाजपाईयों का हंगामा भी कम नहीं था। उन्होंने प्रशासन पर धांधली का आरोप लगाया। यहाँ निर्दलीय मंजू नेगी ब्लाक प्रमुख बनी। मंजू की जीत से उनके पति तेज तर्रार नेता संजय नेगी का कद बढ़ चुका है। भाजपा की सारी रणनीति फेल करने के अलावा उन्होंने कांग्रेस पर भी दबदबा बनाया। बेतालघाट ब्लाक प्रमुख चुनाव के दौरान लाइसेंसी असलहों का प्रदर्शन शर्मनाक था। फायरिंग में एक व्यक्ति के पैर पर गोली लगी। ग्रामीणों और कांग्रेस ने प्रदर्शन करते हुए गोलीकाण्ड के लिये भाजपा को जिम्मेदार ठहराया। घायल महेन्द्र सिंह के साथी भुवन तिवारी ने दस युवकों के खिलाफ नामजद मुकदमा दर्ज कराया है। पुलिस ने मामले में दीपक सिंह रावत निवासी चित्रकूट रामनगर, यश भटनागर निवासी शिवलालपुर रोनिया रामनगर, वीरेन्द्र आर्य निवासी लखनपुर रामनगर, रविन्द्र कुमार निवासी ढेला पटरानी, प्रकाश भट्ट, पंकज पपोला खुरियाखत्ता बिन्दुखत्ता को गिरफ्तार कर लिया है। वारदात में इस्तेमाल किए गए दो वाहनों को भी जब्त कर लिया है। द्वाराहाट में पत्थरबाजी की घटना भी शर्मनाक है। मतदान से पहले कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने भाजपा पर दो क्षेत्र पंचायत सदस्यों का राजनीतिक अपहरण करने का आरोप लगाया था। इसके बाद इन्होंने द्वाराहाट-कर्णप्रयाग हाईवे पर चक्काजाम किया। यहाँ कांग्रेस प्रत्याशी डॉ. आरती किरौला प्रमुख बनी हैं। पुलिस ने चुनावी रंजिश को लेकर हुए जानलेवा हमले के मामले में तीन आरोपी गिरफ्तार कर लिये हैं।

मुनस्यारी ब्लाक प्रमुख चुनाव कांग्रेस प्रत्याशी ने जीता। विजयी जुलूस के दौरान जबरन उलझने से माहौल अशान्त दिखाई दिया। एक होटल के पास जुलूस और बम पटाखे जलाने का जोर था और उत्साही युवा भिड़ गये। इस माहौल से क्षेत्रवासी चिन्तित हैं कि शान्तप्रिय इलाके में यह सब क्या होने लगा है। गंगोलीहाट में ब्लाक प्रमुख का चुनाव कांग्रेस के पाले में गया लेकिन यहाँ एक शिक्षक नेता का ऑडियो वायरल हो रहा है और उन पर आरोप लगाये जा रहे है। कि वह व्यउरसर सदस्यों की खरीद-फरोख्त की कोशिश कर रहे थे।

गदरपुर विकास खण्ड के विजयी बीडीसी सदस्य को प्रमाण पत्र जारी नहीं किये जाने का मामला भी गरमाया। पूर्व विधायक राजकुमार ठुकराल और तराई किसान संगठन के केन्द्रीय अध्यक्ष तजिन्दर सिंह विर्क ने डीएम कार्यालय में धरना दिया। बाजपुर विकासखण्ड क्षेत्र से जुड़े किसानों की एक बैठक गुरुद्वारा साहिब के लंगर हाल में हुई जिसमें चुनाव पर पुलिस की भूमिका को लेकर भारी रोष जताते हुए प्रदर्शन किया गया। आरोप लगाया कि पुलिस के कुछ लोग क्षेत्र पंचायत सदस्यों के घरों में जाकर दबिस से रहे है। और उन्हें डराया धमकाया गया। हालातों को देखते हुए चुनाव के दिन सैकड़ों की संख्या में लोग डटे रहे। रुद्रपुर में भी तनाव की स्थिति देखते हुए भारी पुलिस बल तैनात रहा।

प्रदेश के पूरे चुनाव पर यदि दृष्टि दौड़ाई जाए तो पता चलता है कि पार्टी ताकत से ज्यादा निर्दलीय ताकत थी। पार्टी ने बाहर से समर्थन किया था ताकि जीतने वाले को अपनी पार्टी का नाम दिया जाए। इसमें भाजपा प्रचण्ड यानी दस जिलों में जिला पंचायत सीटों पर और कांग्रेस एक सीट पर है। देहरादून की सीट कांग्रेस के पक्ष में साफ है। ब्लाक प्रमुख सीटों पर भी ताकतवर चेहरों को समर्थन देकर पार्टियों ने अपनी ताकत बढ़ानी चाही है। ताकत बढ़ाने के इस कारनामे से ही माहौल गड़बड़ा रहा है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

किसके पास है.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

को खूबसूरत, बेशक अब दुरूह हो चुकी दार्शनिक शब्दावली और शैली में पेश किया गया है। इसके साथ ही आरण्यकों एवं उपनिषदों में सीधे-सीधे दार्शनिक चिन्तन सरल सहज भाषा शैली में रख दिया गया है। दर्शन का आकर्षण इतना बढ़ गया कि यजुर्वेद के चालीसवें यानी आखिरी अध्याय को, जिसमें जबर्दस्त मस्ती हमें मिल जाती है, बाकायदा ईशोपनिषद के नाम से अलग किताब के रूप में स्थापित कर दिया गया। वैदिक मन्त्र रचना के इस अन्तिम काल में जब दार्शनिक ठाठ देवताओं के वर्णनों पर भारी पड़ने लगा था, सृष्टिसूक्त भी लिखा गया, जो अपनी शैली और दार्शनिक उदात्तता के कारण तमाम दार्शनिक सूक्तों का सिरमौर मान लिया गया है।

इस विराट दार्शनिक सूक्त में सिर्फ सात ही मन्त्र हैं। हम दोहरा रहे हैं- सात। और इन सात मन्त्रों ने ही इसे अपने क्षेत्र की शिखर रचना बना दिया है। इस सूक्त के पहले मन्त्र का पहला शब्द है- 'नासद्' और उसी आधार पर उसे नासदीय सूक्त भी कहा जाता है। बल्कि सृष्टि सूक्त की तुलना में नासदीय सूक्त ही ज्यादा मशहूर नाम हो गया है। नासदीय सूक्त की खूबसूरती यह है कि इसमें ऋषि ने पहले क्या था, अर्थात यह दुनिया कहाँ से पैदा हुई, इस मुश्किल सवाल का जवाब ढूँढना चाहा है। सात मन्त्रों में ही कई तरह के विचार सागरों में गोते लगाकर कवि अन्त में हाथ झाड़ देता है कि उसे नहीं पता कि यह सृष्टि कहाँ पैदा हुई और जब यह नहीं थी, तक क्या था।

सूक्त के रचयिता का नाम है- परमेष्ठी। परमेष्ठी ब्रह्मा का नाम भी है। यह बिल्कुल सम्भव है कि कवि का नाम ही परमेष्ठी हो और संयोगवश इसने सृष्टि पर सूक्त लिख दिया हो, जो ब्रह्मा की उत्पत्ति मानी जाती है। यह भी बिल्कुल सम्भव है कि उसका असली नाम कुछ और ही हो और सृष्टि सूक्त की रचना से मिली ख्याति और प्रतिष्ठा के कारण उसने अपना नाम परमेष्ठी रखने का शौक फरमा दिया हो। पर चूँकि परमेष्ठी नाम ब्रह्मा का है, और इस सृष्टि को ब्रह्मा की उत्पत्ति माना जाता है, इसलिए वेदों के व्याख्याकारों ने, व्याख्याकार-सायण आचार्य ने भी, इस सूक्त के रचयिता का नाम परमेष्ठी प्रजापति कह दिया है, जो सुनकर अच्छा ही लगता है। वेदों को ईश्वरीय वाणी मानने वाले व्याख्याकारों ने ऐसे कई सारे मजेदार काम किए हैं।

पूरा नारदीय सूक्त एक ही सवाल से जूझता है- इस सृष्टि से पहले क्या था? सृष्टि कहाँ से पैदा हुई? अब जरा जवाब सुनिए। सृष्टि सूक्त ऋग्वेद के मण्डल संख्या 10 का 129वां सूक्त है। अब हम आपका 10, 129 संख्या वाले इस सूक्त के इन सवालों के जवाब सुनाते जाते हैं और बिना मूल उद्धृत किए कोष्ठकों में सिर्फ मन्त्र संख्या लिखते चले जाते हैं ताकि परमेष्ठी में उतरों को बिना रुकावट के उनके अपने प्रवाह के सौन्दर्य में जाना जा सके। तो इस सृष्टि से पहले क्या था? इस सवाल के जवाब में परमेष्ठी का कहना है- न तो असत् था और न ही सत् था। न तो कोई बस्ती कहीं बसी हुई थी और न ही कोई अनन्त आकाश ही कहीं फैला हुआ था। क्या कोई वितान चारों ओर छाया हुआ था? या कि गहरा गम्भीर पानी ही पानी सब ओर बह रहा था?

(1)। कवि के पास कोई जवाब ही नहीं है पर उसकी विार प्रक्रिया थमना ही नहीं जानती- न तो उस वक्त मृत्यु का साम्राज्य था और न ही समरता का कोई असर था। न रात थी और न ही दिन का कोई ज्ञान किसी को उस वक्त था। न तो तब कहीं प्राणका कोई संचार था और न ही वातहीनता थी। कुछ समझ में ही नहीं आ रहा कि तब क्या था (2)।

अब जरा कवि के अनुमान देख लिये जाएँ- अरे, तब तो सब जग अँधेरा ही था और अँधेरा भी भी कैसा? हर तरफ अँधेरे से ढका हुआ। शायद चारों ओर अविभक्त जल का प्रवाह ही चल रहा था। या फिर शायद किसी छोटी सी चीज से ही सारा जगत् ढका हुआ बन्द पड़ा था। पर सहसा कवि कह उठता है कि यह सब महत् तप से ही पैदा हुआ होगा (3)। भूमिसूक्त के दौरान हमने देखा था कि कैसे वहाँ भी कवि ने भूमि की स्थिरता का रिश्ता तप से जोड़ा था।

फिर कवि कहने लगता है कि सब तरफ काम ही काम था (4)। या फिर एक रोशनी की लाइन-सी खिंची पड़ी थी, जो आड़ी भी थी और तिरछी भी थी, ऊपर भी थी, नीचे भी थी (5)। ऐसी कई तरह से हाथ-पैर मारने के बाद जब कवि को पता ही नहीं चल पाता कि आखिर क्या था तो वह हारकर कहने लगता है- भला कौन जानता है, कौन बता सकता है कि यह सृष्टि कहाँ से पैदा हुई, कहाँ से आई (6)? शायद देवता बता सकें। पर कैसे? फिर कवि एक मजेदार बात कहता है कि जब देवता लोग ही इस सृष्टि के बाद पैदा हुए तो वे भी कैसे बता पाएँगे कि सृष्टि कैसे पैदा हो गई (6)।

इसलिए एक ही व्यक्ति इस पूरे ब्रह्माण्ड में है, बता सकता है कि दुनिया कैसे बनी और वह है ईश्वर, जिसे कवि ने ब्रह्माण्ड का अध्यक्ष कहा है। पर कैसे मिले उस ईश्वर से? उस अध्यक्ष से? पर क्या जरूरी है कि उसे भी पता होगा? और ठीक उसी कशमकश में परमेष्ठी कव ने अपने नासदीय सूक्त का आखिरी वाक्या लिख दिया है- यो अस्याध्यक्षः परमे व्योमन् सो अग्ड. वेद यदि वा न वेद, यानी जो खुदावन्द सातवें आसमान में लुका बैठा है, पता नहीं वह भी इस सृष्टि का रहस्य जानता है या नहीं जानता (7)।

सूक्त तो खत्म हो गया। जब परमेष्ठि ही नहीं बता पाए कि यह सृष्टि कैसे बनी तो हम भला कहाँ से बता पाएँगे, पर अपनी वैचारिक उठापटक में परमेष्ठी इतनी बातें बता गया है कि दार्शनिक और वैज्ञानिक चाहें तो नासदीय सूक्त के आधार पर दर्जनों-दर्जन प्रामाणिक रिसर्च पेपर लिख सकते हैं और सेमिनारों में दिनों-दिन बहस कर सकते हैं।

(साभार नवभारत टाइम्स)

पर्यटन सचिव धीराज गर्ब्याल का दौरा

उत्तराखण्ड-उ.प्र. बार्डर पर बनेगा प्रवेश द्वार और खटीमा का होगा सौन्दर्यीकरण

खटीमा। पर्यटन सचिव धीराज गर्ब्याल ने मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के गृहनगर खटीमा का दौरा करते हुए अनेक घोषणाएं की। उन्होंने कहा कि उत्तराखण्ड-उत्तर प्रदेश के पीलीभीत बार्डर पर सुन्दर प्रवेश द्वार बनाया जाएगा। साथ ही चूका को इको पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाएगा।

श्री गर्ब्याल ने कहा कि खटीमा के मुख्य मार्गों का सौन्दर्यीकरण किया जाएगा। उन्होंने पीलीभीत मार्ग स्थित सिटी फॉरेस्ट पार्के का भी निरीक्षण किया और कहा कि 16 हेक्टेयर भूमि पर सुन्दर सिटी फॉरेस्ट पार्क बनाया जाएगा। जिसमें विभिन्न प्रकार के फूल, पौधे के साथ ही पाथवे, योगा, मेडिटेशन सेन्टर व अन्य सुविधाएं मौजूद होंगी। इसके लिये उन्होंने वन अधिकारियों को जल्द प्रस्ताव तैयार कर शासन को भेजने के निर्देश दिये। उन्होंने शारदा डाम के किराने मौजूद चूका फॉरेस्ट कैम्प को इको पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने की भी बात कही। कहा कि चूका में इको पर्यटन की अपार सम्भावनाएं हैं। उन्होंने प्रभागीय डीएफओ को पर्यटन गतिविधियों से जुड़ा एक व्यापक प्रस्ताव भेजने के निर्देश दिये।

पर्यटन सचिव ने नगला तराई में 2.54 करोड़ की लागत से निर्माणाधीन मां पूर्णागिरी मन्दिर का भी स्थलीय निरीक्षण किया और सितम्बर अन्त तक निर्माण कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिये।

ऐतिहासिक कुआं बचाने की मुहीम

अल्मोड़ा। शहर के नरसिंहबाड़ी स्थित डेढ़ सौ साल पुराने ऐतिहासिक कुआं के अस्तित्व बचाने के लिये मुहीम जारी है। नगर निगम के पार्षदों और स्थानीय लोगों ने कुआं के आसपास सफाई अभियान चलाया। साथ ही प्रशासन से कुआं के अस्तित्व को बचाने के लिये जरूरी कदम उठाने की मांग की गई। पर्वतीय क्षेत्र में यह एकमात्र चौबीस फिट गहरा कुआं बताया जा रहा है। इसके लिये समाजसेवी पहले भी कई पत्राचार कर चुके हैं।

ग्लेशियर झीलों से खतरों का आकलन करेगा यूकास्टा

देहरादून। मुख्य सचिव आनन्दबर्द्धन ने उत्तरकाशी के धराली और ऋषिगंगा समेत प्रदेश के अन्य उच्च हिमालयी क्षेत्रों में स्थित ग्लेशियर और ग्लेशियर झील का तत्काल विश्लेषण कर सम्भावित खतरों का त्वरित आकलन कर रिपोर्ट तैयार करने के निर्दश दिये हैं। इसके लिये राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद (यूकास्टा) के महानिदेशक प्रो.दुर्गेश पन्त को जिम्मेदारी सौंपी गई है।

उन्होंने कहा कि धराली जैसे सम्वेदनशील क्षेत्रों को प्राथमिकता देने के साथ ही पूरे प्रदेश के ऊंचाई वाले इलाकों का सर्वे कर झील बनने या उसका विस्तार होने वाले स्थलों को चिन्हित किया जाएगा। इससे भविष्य में धराली जैसी अप्रिय घटना से होने वाले जानमाल के नुकसान को रोका जा सकेगा। इस कार्य के लिये उत्तराखण्ड स्पेस एप्लीकिशन सेन्टर (यूसैक) को नोडल एजेंसी नामित किया गया है। कहा कि यह विश्लेषण एक सतत प्रकिया होनी चाहिये।

Enjoy Beauty of
Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
मदकोट सम्पर्क
नरेन्द्र सिंह रावत 7351285555

जंगपांगी जनरल स्टोर
मदकोट रोड, दरांती मनुस्यारी
(सीमेन्ट, पेण्ट, हार्डवेयर सामग्री के लिये सुलभ स्थान मो.- 9760342346

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
मो.न.
8958525979,
9411134775
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
फोन सम्पर्क-
05961-222236
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

लला जसुली की बेरीनाग धर्मशाला को अतिक्रमण से बचाने में भूतपूर्व सैनिक वेलफेयर सोसाइटी का योगदान

जसुली लला स्मृति मंच की अपील धरोहर को बचाएं

प्रशासन ने सुरक्षा के लियेपैमाइश कर एंगिल गाड़ दिए

पर्यटन अधिकारी ने भी स्थल का निरीक्षण किया

बेरीनाग। दानवीरांगना लला जसुसी बूढ़ी शौक्याणी की शहर से लगी ऐतिहासिक धर्मशाला को लेकर सक्रिया देखी जा रही है। इसे बचाने के लिये भूतपूर्व सैनिक वेलफेयर सोसाइटी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। बताया जा रहा है कि विगत दिवस सोसाइटी से जुड़े लोग और समाजसेवी धर्मशाला में उग आई झाड़ कटाने व सफाई के लिये पहुँचे तो कतिपय जन उनसे बहस करने लगे। इसकी सूचना पर जसुली लला स्मृति मंच ने तुरन्त प्रशासन से सम्पर्क साधा और सभी से अपील की कि ऐतिहासिक धरोहर बचाने में सहयोगी बनें।

मंच के अध्यक्ष फली सिंह दताल ने भूपू सैनिक संगठन का आभार प्रकट करते हुए कहा है कि कैप्टन लक्ष्मण सिंह डांगी इस धरोहर को बचाने के लिये संरक्षक की भूमिका में रहे हैं। श्री डांगी व उनके साथी कई वर्षों से लला जसुली की इस यादगार को बचाने के लिये संघर्ष कर रहे हैं।

बताया जा रहा है कि सोसाइटी के लोगों को साफ-सफाई के दौरान दिक्कत करने वालों की शिकायत होते ही प्रशासन ने धर्मशाला की पैमाइश करते हुए एंगिल गाड़ दिए ताकि यह सुरक्षित रहे। एसडीएम ने आश्वासन दिया कि धरोहर को संरक्षित रखेंगे। उनके निर्देश पर पटवारी ने पैमाईश की। इस बीच पर्यटन अधिकारी ने भी धर्मशाला का निरीक्षण किया है। बताते चलें कि मुख्य मार्ग पर यह ऐतिहासिक धर्मशाला को यदि नगर पालिका संवार सकी तो यह दर्शनीय स्थल बनेगा।

लोकोत्सव के इस पावन मास में हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

भगत सिंह टोलिया

(सेनि. डीआईजी बीएसएफ)

'मालती कुंज' चौपला चौराहा, वीरपारो मार्ग (गैरबैशाली) विठौरिया नं- 1, हल्द्वानी

न तेरा न मेरा Thats

APNA GHAR चौकोड़ी

HOTEL RESTRO BANQUET

मो.- 9458920379, 6396098804

YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING

Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)

पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

आर.के.इंटरप्राइजेज

बुक जंक्शन

गरमपानी (नैनीताल)

Hotel Bala Paradise

Tiksain, Munsiari

Ph. 05961222237, 9412951678

Hayat Paradise

Bus Station

Munsiari

Ph. 09411556700, 9997733070

धमोत होम स्टे

धरमघर/चकोड़ी

(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)

www.mountainheights.in

मो. 9760007148

खजान गड्डू

पूर्व दर्जा राज्यमंत्री

गंगोलीहाट विधानसभा

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,

editorpighaltahimalay@gmail.com

Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)